This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **8622**

Unique Paper Code : **2052101201**

Name of the Paper : **हिंदी कविता : सगुण भक्तिकाव्य एवं रीतिकालीन काव्य**

Name of the Course : **ITEP**

Semester : **II**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्न पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×9=27

(क) बिप्र रूप धरि बचन सुनाए। सुनत बिभीषण उठि तहँ आए।।

करि प्रनाम पूँछी कुसलाई। बिप्र कहहु निज कथा बुझाई।।

की तुम्ह हरि दासन्ह महँ कोई। मोरें हृदय प्रीति अति होई।।

की तुम्ह रामु दीन अनुरागी। आयहु मोहि करन बड़भागी।।

अथवा

हमारे हरि हारिल की लकरी।

मन बच क्रम नंदनंद सों उर यह दृढ़ करि पकरी।।

जागत, सोबत, सपने सौंतुख कान्ह-कान्ह जकरी।

सुनतहि जोग लगत ऐसो अति! ज्यों करुई ककरी।।

सोई व्याधि हमें लै आए देखी सुनी न करी।

यह तौ सूर तिन्हैं लै दीजै जिनके मन चकरी।।

P.T.O.

(ख) मेघ मंदाकिनी चारु सौदामिनी

रूप रूरे लसैं देहधारी मनौ।

भूरि भागीरथी भारती हंसजा

अंस के हैं मनौ भाग भारे मनौ।।

देवराजा लिये देवरानी मनौ।।

पुत्र संयुक्त भूलोक में सोहिए।

पक्ष दू संधि संध्या सधी है मनौ

लछिये स्वच्छ प्रत्यक्ष ही मोहिए।।

अथवा

लिखन बैठि जाकी सवी गहि गहि गरब गरूर।

भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर।।

(ग) रूपनिधान सुजान सखी जब तें इन नैननि नेकु निहारे।

दीठि थकी अनुराग-छकी मति लाज के साज-समाज बिसारे।

एक अचंभौं घनानंद हैं नित ही पल-पाट उघारे।

टारें टरें नहीं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन-मोह के तारे।।

अथवा

सबन के ऊपर ही ठाढ़ो रहिबे के जोग,

ताहि खरो कियो छ हजारिन के नियरे।

जानि गैर मिसिल गुसीले गुसा धारि उर,

कीन्हों न सलाम, न बचन बोले सियरे।

भूषण भनत महाबीर बलकन लाग्यौ,

सारी पातसाही के उड़ाय गए जियरे।

तमक तें लाल मुख सिवा को निरखि भयो,

स्याम मुख नौरंग, सिपाह मुख पियरे।।

2. रामचरितमानस के सुंदरकांड के कथ्य पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

केशवदास की 'रामचंद्रिका' की संवाद योजना पर विचार कीजिए।

3. एक उपालम्भ कांव्य के रूप में सूरदास के "भ्रमरगीत सार" पर विचार कीजिए। 15

अथवा

'बिहारी की कविता में भक्ति, नीति और लोक का समन्यवय है।' इस कथन की पुष्टि कीजिए।

4. घनानंद की वियोग की अन्तर्दशाओं की ओर दृष्टि अधिक है। इस मत की समीक्षा कीजिये। 15

अथवा

भूषण राष्ट्रीय चेतना के कवि हैं। उनकी कविता के आधार पर प्रमाणित कीजिये।

5. किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 2×9=18

(*i*) वीर रस के कवि भूषण

(*ii*) सूरदास की काव्य भाषा

(*iii*) तुलसी की भक्ति-भावना

(*iv*) रामचंद्रिका का महत्व

(*v*) मुक्तक काव्य

(*vi*) रीतिमुक्त, काव्य और घनानंद।